* श्री अवधवासी परत्व-महिमा *

(ले०—सा० स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी महाराज)

जय जय अवध गजानन मारद ॥

श्री सत्यावर वासिन मुदमति देव सतत वंदित मुनि नारद ।
युगलानन्यशरण विमलावर वास दीजिए बुद्धि विसारद । १ ॥

जय जय अवध नैनजा रेनू ॥

जिनके दरस परस के कीन्हें होत विपुल फल कल सुर धेनु ।
युगल अनन्य शरण कह दीजै सरस सनेह स्वाद सुख सेनू ॥ २ ॥

जय जय अवध निवासी अग जग ॥

नेकु कृपा हेरत जन जाहिर जग जागत जस जग--मग।
युगल अनन्य शरण अपनाइये निकट निवास दीजिए सग वग॥ ३॥

जय जय अवध धाम पाँचो तत्॥

शुद्ध-सच्चिदानन्द द्वन्द दुःख दारिद दरन हरन संसृत मत्।
युगलानन्य शरण वपु निजमय आप परहित दीजिए संतत॥ ४॥

जय जय अवध राज राजेश्वर॥

महिमा गुण प्रताप अनुपम पर प्रेम बिवस सुन राम परेश्वर।
युगलानन्य शरण वंदत पदपंकज पूजित निखिल नरेश्वर॥ ५॥

जय जय अवध महिप महारानी॥

सुख सोभा सौभाग्य दिवा गुण प्रेम प्रकाश मधुर वर वानी।
युगलानन्य शरण वंदत पदपंकज--रज हित नेह निसानी॥ ६।

जय जय महल दास दासी गण॥

श्रीसीतावर जनक जननि सुचि सेवा सानुकूल प्रमुदित मन।
युगलानन्य शरण सरसाइये दे वर विशद प्रीति मन संतन॥ ७॥

जय जय अवध चरन चारो वर॥

सदा कृतारथरूप राम प्रिय हिय अनुराग बाग बिगसित तर।
युगल अनन्य शरण प्रनमत पद दीजिए सिय रघुवीर भाव भर॥ ८॥

श्री साकेत सुराज सचिव गण॥

अष्ट सिद्धिदायक आठो गुण मंडित पर पंडित सब विधि धन।
युगल अनन्य शरण कह दीजै श्री सरयू तट बास अबल पन। ९॥

जय जय श्री सिय पिय सुहृदन पद॥

वंदन करत भरत मंगल मुद रघुवर चरण सरोज देत सद।
युगल अनन्य शरण याचक को दीजे सीता राम प्रेम हृद॥१०।

जय जय अवध मन्त्र सुखदाई॥

श्रीसीता रघुनन्द भजन रत उपदेशक प्रभु सुजन बड़ाई।
युगल अनन्य प्रेम परिपूरण विश्व वासना विलग सदाई। ११।

जय जय अवध कोटिक मनीतर॥

माया सबल प्रवेश लेश जहँ करि न सकति अति डरति ईश डर।
युगल अनन्य ओट जिनके रहि हरसायत आनन्द कृपा कर॥१२॥

धन्य श्री अवध शहर गिरिवर गण॥

रत्नाचल आदिक जगमग दुति युगल विहार सुथल मंगल धन।
युगल अनन्य शरण वन द्रुमवर वाग गगवर भरद नगर धन ॥१३॥

धन धन अवध सनेही सज्जन।

सिय वर भजन श्रवण गुणचिन्तन तीन काल सरजू जल मज्जन।
युगलअनन्य शरण विाध कोमल कांतिभांति सम शमन सुरज्जन १४

जय जय अवध गली मन भावनि॥

जिन विहरत प्रिय गुनन सहित श्रीरमिकराज अनुराग विभावनि।
युगल अनन्य शरण सबही विधि बड़भागी जेहि रुचत प्रभावनि॥१५।

धन धन अवध धाम के कीसा॥

सदा असंक शंक नहिं रंचक गनै न रंक महींसा।
युगल अनन्य शरण सबही विधि पूजनीय अज सुरन अहीसा।१६।

धन धन अवध शहर सुचि सूकर॥

श्री सरयू तर तीर वाग विच विचरत सतत हरन भव रूकर।
युगल अनन्य शरण वंदत नित जानि कृतारथरूप सुभूपर॥१७॥

धन धन अवध स्वान बड़भागी॥

सन्त सुजान सुसीतप्रसादी पावत प्रेम बढ़ाय अदागी।
युगल अनन्य शरण निदरत जो सो सब भांति विशेष अभागी॥१८॥

धन धन अवध नगर के मोर॥

वन वागन महँ वन मधि विहरत करत मनोहर शोर।
युगल अनन्य श्याम घन निरखत नाचत मुदित शाम अरु भोर। १६॥

धन धन अवध कोक अरु कोकी।

श्री सरजू तट में खेलत नित विगत वियोग अशोकी।
युगल अनन्य प्रीति तिनकी बिन वाद वादनाओं की॥ २०॥

धन धन अवध विहंग रंगीले॥

राजत जहँ तहँ डार डार तरु स्वादत सुफुल रसीले।
युगल अनन्य सिया बल्लभवर मगन नाम वंदत सरसीले॥२१॥

धन धन अवध पुरी पुर हंस॥

श्री सरजू सी पूज पावन नित प्रमुदित करत प्रसंस।
युगल अनन्य सुदृग देखत जेहि तेहि विवेक अवतंस॥२२॥

धन धन अवध सुपुर की चीटी॥

रस रस चलत सदा रस ग्राही निर्विरोधता मीठी।
युगल अनन्य अनन्य अवध की दिए सकल जग पीठी ॥२३॥

धन धन अवध पुरी की मच्छी ॥

श्री सरजू जल माँह कलोलत दरसत सबविधि अच्छी।
युगल अनन्य नीर नर दूजो परसत पिअत न पच्छी ॥२४॥

धन धन अवध सियार सनेही ॥

साँझ समय सिय राम पुकारत बोलत वचन निरेही।
युगल अनन्य शरण तिनसम नहीं सुरनायक गन देही ॥२५॥

धन धन अवध शहर बड़ घोड़े ॥

कहा वखानो छवि सु ता लग तिब्र गवन जित जोरे।
युगल अनन्य राम रघुवर प्रिय समरन मुख तिल मोरे ॥२६॥

धन धन अवध पुरी के ऊँट ॥

भोजन अलप काज बहु साधन पहुँचावत छन में चहूं खूट।
युगलानन्य लेत नहिं सपनेहु मोक्ष पदवि पुर लूँट ॥२७॥

धन धन अवध शहर की बकरी ॥

कामधेनु मन कोटि अधिकजन अभिमत देत विमोहन चकरी।
युगल अनन्य अवध वासिन प्रिय छीर गुनद रूजहरत न शकरी॥२८॥

धन धन अवध शहर की गैया ॥

बड़भागिन घर घर विच राजति सुकृत समूह महैया।
युगल अनन्य श्याम सुन्दर प्रिय गुनगहि अगुन दहैया ॥२९॥

धन धन अवध वरद वरदायक ॥

मौंज समेत मोहने राजत शृङ्गादिक भूसित सब लायक।
युगल अनन्य युते वरू प्रभु पथ विचरत कोउ मानुमन भायक ३०॥

धन धन अवध शहर के गैंड़े ॥

महामत्त मातंग सदृश छवि हर हमेश रहे अैंडे।
युगल अनन्य रामपुर वासिन ढिग मन मुक्ति परम पद पैंडे ॥३१॥

धन धन अवध पुरी के बेसर ॥

उत्तम भार पीठ पर राखत लौंग सुपारी केशर।
युगल अनन्य स्वामि कारज रत तिनहिं प्रसंसत देव महीसुर ॥३२॥

धन धन अवध शहर सुचि स्वान ॥

बोले मधुर कहत कछु नाहीं सेवक धर्म निरत जग जान।
युगल अनन्य दशोगुन पूरन उपदेशत सुख खान ॥३३॥

धन धन अवध पुरी की बिल्ली॥
दूध दही घर घर में चाखत भाषत मधुर सुधुनि जिमि झिल्ली।
युगल अनन्य युगल मंदिर में विचरत रहत सदिल्ली॥३४॥

धन धन अवध चकोर विलासी
श्रीरघुनन्दन वंद चंदलखि प्रमुदित नेह निवासी।
युगल अनन्य आसकी साँचो सन्त सराहत खासी॥३५॥

धन धन अवध कोकिला प्यारी॥
सीताराम नाम मधुरे स्वर कूजत प्रेम बढ़ावत भारी।
युगल अनन्य शरण बाणीं सुनि भए कविगन बलिहारी॥३६॥

धन धन अवध अजूब पपीहा॥
धर अनन्य व्रत स्वाति श्यामघन फुरत और नहिं ईहा।
युगल अनन्य साच शिखवत सिख रटन नाम जे जीहा। ३७।

धन धन अवध शहर पारावत॥
उड़त सोहावन लगत मनोहर व्योम कला मन भावत।
युगल अनन्य सपरिकर सियवर अवलोकत मुद मोद बढ़ावत॥३८॥

धन धन अवध नगर की चिरियाँ॥
दंपति समुद डार डारन पर विरहरत महामोद मन धरिया।
युगल अनन्य बिसरि बैठी सब जेती तीरथ पुरियाँ॥३९॥

धन धन अवध शहर प्रिय खंजन॥
मनरंजन बिहरत प्रमोदवन उपमा नैन सदंजन॥
युगल अनन्य रसिक रघुवरगुन गावत दोष विभंजन। ४०॥

धन धन अवध नीलकंठादिक॥
पंथ पयान समे सुखदायक सदा सरस रस स्वादिक।
युगल अनन्य रूप सुन्दर पर दृग थकि रहत अमायक॥४१॥

धन धन अवध छबीले सुवा॥
हरित नील कोउ अरुन स्वेत तन बोलि जिवावत भूवा।
युगल अनन्य मधुर बचनन पर आप निछावर रूवा ४२॥

धन धन अवध अनुठी मैना॥

ललित लता पिंजरन बिच राजत बचन सरस सुख सैना।
युगल अनन्य ज्ञान उत्तम रति उपदेशति गुन अैना॥४३॥

धन धन अवध हरिन रंगभीने॥

चंचल चारुचषन चितचोरत उर उत्साह नबीने।
युगल अनन्य सरन सिय पिय गुन सुनत सुमन मति दीने॥४४॥

धन धन अवध शेर बलरासी॥

महाराज प्यारे सूरन सम सोहत सदा सुपासी।
युगल अनन्य कनक पिंजरन बिच कोऊ फिरत खलासी॥४५॥

धन धन अवध नगर के बाजा॥

उड़त स्वतन्त्र सहज मदमाते रघुवर जिन्हें निवाजा।
युगल अनन्य कोऊ कर ऊपर गाजि रहे सजि साजा॥४६॥

धन धन अवध रंगीले लाल॥

श्रीनृपलालनकों अति भावत हरित पीत कोउ रंग गुलाल।
युगल अनन्य दुलारहिं परिकर पेखत छवि जन होहिं निहाल॥४७॥

धन धन अवध चिल्ह सह कागा॥

चिरंजीव अति चतुर नीलमणि सदृश बचन रुचि रागा।
युगल अनन्य सकुन सुन्दर करदेत जनन बड़भागा॥४८॥

धन धन अवध कूप रस पूरन॥

मिष्ट इष्ट लागे सबही जन सुधा स्वाद सकुचात अनूरन।
युगल अनन्य रूजालि त्रिबिधि दुख दरन करन संजीवन चूरन॥४९॥

धन धन अवध शहर वर बापी॥

शीतल मधुर महामृत पूरन पानकरत सिद्धादिक जापी।
युगल अनन्य सकृत परसत तन तरत बिलंब बिना बड़पापी॥५०॥

धन धन अवध बिचित्र तडागा॥

पर उपकार निरत मारग मधि सब प्रकार बितरत अनुरागा।
युगल अनन्य तृषा श्रम व्याकुल सुखदायक उर देत विरागा॥५१॥

धन धन अवध मतंग सोहाए॥

झूमत रहे राजद्वारेपर श्री गणेश पूजित मन भाए।
युगल अनन्य छबीले राघव परिकर सहित चढ़त छवि छाये॥५२॥

जय जय अवध निवासी सब जन॥

बारंबार नमो तिनके पद पंकज धूरि भूरि मुद वर धन।
युगल अनन्य सुपद किंकर लखि दीजै अवधवास अविचल पन। ५३॥

धन धन अवध भूमि :सरजू जल॥

जहाँ समुद विहरत रघुवर श्री भरत लषन रिपुदमन महाबल।
युगल अनन्य शरण पल पल पर प्यास बढ़त श्रीधाम रहस थल ५४॥

❀ इति श्री युगलानन्यशरण विरचित अवधवासी परत्व महिमा संपूर्ण ❀